इकाई 2 भारत में राजनीतिक दल*

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 परिचय

2.2 भारत में राजनैतिक दलों के प्रकार

- 2.2.1 राष्ट्रीय दल
- 2.2.2 राज्य दल/क्षेत्रीय दल
- 2.2.3 पंजीकृत दल/गैर-मान्यता प्राप्त

2.3 राष्ट्रीय दल

- 2.3.1 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) या कांग्रेस (आई)
- 2.3.2 भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी)
- 2.3.3 बहुजन समाज पार्टी (बसपा)
- 2.3.4 भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीआई) और भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) (सीपीआई (एम)
- 2.3.5 राष्ट्रवादी कांग्रेस दल (एनसीपी) तथा अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस दल (टीएमसी)

2.4 राज्य दल/क्षेत्रीय दल

- 2.4.1 एम.पी, वी.के.डी/वी.एल.डी, और जनता दल (यू)
- 2.4.2 डी.एम.के, ए.आई.डी.एम.के. तथा टी.डी.पी.
- 2.4.3 ए.जी.पी
- 2.4.4 आम आदमी पार्टी (आप)
- 2.4.5 षिरोमणि अकाली दल (एस.ए.डी.)
- 2.4.6 शिव सेना

2.5 पंजीकृत और गैर मान्यता प्राप्त दल

2.6 सारांश

2.7 संदर्भ

2.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप यह कर सकेंगे :

- राष्ट्रीय, राज्य क्षेत्रीय दलों को परिभाषित;
- भारत के कुछ प्रमुख दलों की भूमिका का विश्लेषण; और
- एक नए दल के गठन के पीछे के कारण की व्याख्या।

2.1 प्रस्तावना

इकाई 1 में आपने राजनीतिक दल के अर्थ के बारे में पढ़ा है। भारत में कई दल है। वे अखिल भारतीय और राज्य स्तरों पर कार्य करते है। भारतीय चुनाव आयोग ने देश के तीन

*डॉ. दिव्या रानी, कंसलटेंट, राजनीति संकाय, इग्नू, नई दिल्ली

प्रकार के राजनीतिक दलों को वर्गीकृत किया हैः राष्ट्रीय, राज्य/क्षेत्रीय और पंजीकृत दल। वर्तमान में भारत में लगभग 2300 राजनीतिक दल है। जिनमें सात राष्ट्रीय दल, 36 राज्य मान्यता प्राप्त दल, 329 क्षेत्रीय दल और लगभग 2044 पंजीकृत/अपरिचित दल शामिल है। अपने चुनाव निष्पादन के आधार पर इन दलों की संख्या बदलती रहती है। और इस इकाई में आप विभिन्न प्रकार के दलों के बारे में पढ़ेंगे।

2.2 भारत में राजनीतिक दलों के प्रकार

इकाई के इस उपखं डमें राजनीतिक दलों को राष्ट्रीय, राज्य/क्षेत्रीय और पंजीकृत दलों के रूप में वर्गीकृत करने के लिए भारत के चुनाव आयोग द्वारा दिए गए मापदंडों की व्याख्या की गई है।

2.2.1 राष्ट्रीय दल

निर्वाचन आयोग के अनुसार किसी दल को राष्ट्रीय पार्टी होने के लिए कम से कम निम्नलिखित योग्यताऐं होनी चाहिए :

i) उसे कम से कम तीन राज्यों से लोकसभा में कम से कम दो प्रतिशत सीटें प्राप्त करनी होती है;

ii) आम चुनाव में पार्टी को छह प्रतिशत वोट मिलें हों कम से कम चार लोकसभा सीटें जीते;

iii) चार या उससे अधिक राज्यों में दल को राज्य स्तरीय पार्टी के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए।

2020 में भारत में सात राष्ट्रीय दल हैः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई.एन.सी), भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी), बहुजन समाज पार्टी (बी.एस.पी), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई), भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी एवं मार्क्सवादी पार्टी (सी.पी.आई) एम, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एन.सी.पी) और अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस।

2.2.2 राज्य दल/क्षेत्रीय दल

चुनाव आयोग, क्षेत्रीय दल के संकल्प का उपयोग नहीं करता है। इसके बजाय में उन्हें राज्य दल की धारणा का उपयोग करते हैं। तथापि शैक्षणिक साहित्य में और सामान्य भाषा में राज्य और क्षेत्रीय दलों को एक दूसरे के लिए उपयोग किया जाता है। परन्तु निर्वाचन आयोग और शैक्षणिक बहस के मामले में राज्यों और प्रादेशिक दलों की परिभाषा भिन्न है। चुनाव आयोग कई राज्यों में अपने चुनावी प्रदर्शन के आधार पर क्षेत्रीय दल की पहचान करता है। शैक्षणिक साहित्य विशिष्ट क्षेत्रों या राज्यों में अपनी नीतियों, गतिविधियों, सहायक आधार और मार्गदर्शन के आधार पर क्षेत्रीय/राज्य पार्टी को परिभाषित करता है, निर्वाचन आयोग के अनुसार जिस दल को राज्य पार्टी माना जाए, उस दल के पास निम्नलिखित योग्यताएँ होनी चाहिए :

i) उसे कम से कम पाँच वर्षों तक राजनीतिक गतिविधि में होना चाहिए।

ii) उसे आम चुनावों में चार प्रतिशत तथा राज्य चुनावों में तीन प्रतिशत स्थान प्राप्त हुआ होना चाहिए।

iii) इसके अलावा इसमें छह प्रतिशत वोटो का समर्थन होना चाहिए।

iv) किसी इकाई को राज्य पार्टी का दर्जा तब ही दिया जा सकता है भले ही वह लोकसभा में या विधानसभा में कोई स्थान नहीं प्राप्त किया हो यदि वह पूरे राज्य में डाले गए कुल मतों में से कम से कम आठ प्रतिशत जीत होनी चाहिए।

2020 में भारत में ऐसे 36 राज्य/क्षेत्रीय दल है जो अपने-अपने राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है। कुछ मान्यता प्राप्त दलों में आम आदमी पार्टी (आप), अखिल भारतीय अन्ना द्रविड मुन्नेन्न कझगम (ए.आई.ए.डी.एम.के), द्रविड़ मुन्नेत कझगम (डी.एम.के), बीजू जनता दल (बी.जे.डी), जनता दल (संयुक्त) (जे.डी.यू) राष्ट्रीय जनता दल (आर.जे.डी), समाजवादी पार्टी (एस.पी.)।

2.2.3 पंजीकृत/गैर मान्यता प्राप्त दल

पंजीकृत दल वह दल होता है जिसे न तो राज्य माना जाता है और न ही राष्ट्रीय दल माना जाता है परन्तु उसका पंजीकरण निर्वाचन आयोग के पास होता है। इसे अपरिचित दल भी कहा जाता है। वर्तमान में भारत में 2000 से अधिक पंजीकृत दल हैं।

2.3 राष्ट्रीय दल

सात राष्ट्रीय दलों से दो दलों ने कांग्रेस और बीजेपी का समर्थन किया है। अधिकतम भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से विभिन्न समय पर राज्यों की सूची। आजादी से पहले दो दशकों तक भारत में कांग्रेस पार्टी अकेली प्रभावशाली पार्टी रही। वस्तुतः भारत के अधिकांश भागों में इसे आधार प्रदान करने के कारण रजनी कोसरी ने 1950-1960 के दशकों की अवधि को एक पार्टी के वर्चस्व की अवधि बताया। कांग्रेस का प्रभुत्व वर्ष 2010 के दशक में भाजपा स्वतंत्रता के पश्चात दो दशकों में कांग्रेस जैसी प्रमुख राष्ट्रीय पार्टी के रूप में उभरी है।

2.3.1 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) और कांग्रेस (आई)

1885 में भारत की सबसे पुरानी पार्टी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के रूप में हुआ था। जैसा कि पहली इकाई में कहा गया है आम तौर पर यह माना जाता है कि कांग्रेस भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान एक आंदोलन था। यह वस्तुतः स्वतंत्रता के बाद एक राजनैतिक पार्टी बन गई थी। उसका मुख्य उद्देश्य स्वतंत्र भारत में चुनाव करना या अपने प्रभुत्व के दौरान कांग्रेस ने सभी जाति समूहों और धार्मिक अल्पसंख्यकों सहित सामाजिक समूहों का समर्थन किया। कांग्रेस नेतृत्व वाली सरकारों ने समाज में परिवर्तन के उद्देश्य से अनेक कल्याणकारी नीतियों की शुरुआत की इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण नीति भूमि सुधार, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का आरक्षण, सामुदायिक विकास कार्यक्रम शामिल थे। हालांकि इन नीतियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, उन्होंने कांग्रेस से समाज के बड़े वर्गों के बीच लोकप्रिय बनाया। लेकिन कांग्रेस की लोकप्रियता लंबे समय तक बरकरार नहीं रह सकी। 1960 के दशक में कांग्रेस नेतृत्व वाली सरकार की नीतियों के विरूद्ध अनेक राज्यों में असंतोष की भावना फैल गयी। इसके परिणाम स्वरूप, कांग्रेस ने 8 राज्यों में 1967 के विधानसभा चुनावों में हार के पश्चात गैर-कांग्रेसी सरकारों की स्थापना हुई इससे भारत की दलीय प्रणाली में कांग्रेस की प्रमुखता समाप्त हो गई। 1969 में कांग्रेस को दो दलों में बाँटा गया, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (संगठन) और कांग्रेस (ओ) थे, जिसके नेतृत्व कामराज और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (रिक्विजिशन), और कांग्रेस (आर) जिसका नेतृत्व इंदिरा गाँधी ने किया लेकिन इंदिरा गाँधी की अध्यक्षता वाली कांग्रेस ने 1971 के आम चुनावों में सर्वाधिक सीट जीतने वाली

पार्टी के रूप में उभरी। 1971 के आम चुनावों में, तथा लोकसभा चुनावों में 518 सीटो में से 352 सीट पर जीत दर्ज की। जैसा कि आपने इकाई-1 में पढ़ा है। जब कांग्रेस पार्टी का दौर था तब 1960 के दशक के अंत से अनेक राज्यों में उभरते हुए क्षेत्रीय दलो और नेताओं में चुनौती दी। और 1970 में अंत में केन्द्र में जनता पार्टी ने इसे चुनौती दी। कांग्रेस 1980 के दशक के दौरान एक मजबूत राजनैतिक शक्ति बनी हुई थी। यद्यपि आने वाले दशकों में हालांकि कांग्रेस एक राष्ट्रीय पार्टी रही, लेकिन एक प्रमुख पार्टी का दर्जा उसने गंवा दिया इसका प्रभाव क्षेत्रीय गठबंधन (यूपीए) के रूप में बना रहा है।

2.3.2 भारतीय जनता दल (बी.जे.पी)

भारतीय जनता पार्टी की जड़ों का पता भारतीय जन संघ से लगाया जा सकता है। यहाँ दी गई भारतीय जन संघ की स्थापना 1951 में हिन्दूओं की राजनैतिक शाखा के रूप में हुई थी। राष्ट्रीय संगठन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक जन संघ/भारतीय संघ (बी.जे.एस) की स्थापना एक विख्यात वकील श्यामी प्रसाद मुखर्जी ने की थी। भारतीय जन संघ ने 1960 के दशक में भारत में हिंदी भाषी क्षेत्रों में अच्छा खासा समर्थन प्राप्त किया। जैसा कि इकाई 1 में बताया गया है कि 1977 में इसका विलय चार अन्य दलों के साथ जनता पार्टी में हो गया। जनता पार्टी के खंड के विघटन के बाद भारतीय जन संघ 5 अप्रैल, 1980 को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नाम से एक अलग नाम वाली पार्टी के रूप में उभरा। इस पार्टी के अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी इसके प्रथम अध्यक्ष थे। 1980 के दशक में भाजपा एक मामूली सी स्थिति में भी, जहां राजनैतिक उपस्थिति हिन्दी प्रदेशों में कुछ ही राज्यों तक सीमित थी। परन्तु, नए राज्य क्षेत्र और नए मित्र देशों की खरीद ने इसे आम जनता के साथ भारत की प्रमुख राजनैतिक ताकत में बदल दिया, जिसके समर्थक पूरे देश के लोग हैं। कांग्रेस के पतन के साथ ही भाजपा का विस्तार हुआ। लोकसभा के राष्ट्रीय स्तर पर इसकी सीटों की वृद्धि हुई। 1984 में इसकी 2 सीटों से बढ़कर 2019 में लोकसभा चुनावों में 303 सीट हो गई। जब 2014 में लोकसभा चुनाव में इसकी वृद्धि हुई। जिनमें इसने 282 सीटें जीत ली थी। उसने अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के लिए आंदोलन, अनुच्छेद 370 का उन्मूलन, तीन तलाक का उन्मूलन आदि जैसे मुद्दों से जुटाने के द्वारा, जनसर्मथन का मार्ग प्रषस्त किया। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एन.डी.ए) के प्रमुख सदस्य के रूप में भाजना 2014 से भारत में केन्द्र सरकार का नेतृत्व कर रही है। तथा 2014 और 2018 के मध्य एन. डी.ए गठबंधन की सरकारें 8 राज्यों से बढ़कर 20 राज्यों में बनीं। 2019 में, 11 राज्यों में भाजपा के नेतृत्व में मुख्यमंत्री पद पर कार्यरत है।

2.3.3 बहुजन समाज पाटी (बसपा)

बहुजन समाज भारत में सामाजिक परिवर्तन का प्रतीक है। यह उत्तर भारत में एक प्रभावशाली राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरा। उत्तर प्रदेश में यह पार्टी चार बार सरकार बना चुकी है और इस पार्टी की नेता (अध्यक्ष) मायावती को उत्तरप्रदेश की मुख्यमंत्री के रूप में चार बार मुख्यमंत्री बनाया गया। जैसा कि इसके नाम से ही पता चलता है कि उसने बहुजन समाज या बहुसंख्यक समाज के बीच एक आधार का सहारा लिया। और दलित, आदिवासी समुदाय, अन्य धार्मिक अल्पसंख्यक (ईसाई, सिख, मुसलमान) जैसे दल (बी.एस. पी) की स्थापना 14 अप्रैल, 1984 को दलित नेता कांशीराम ने की थी। बी.एस.पी. बनाने से पहले कांशीराम ने सीमांत समुदाय को संगठित किया। 1978 में डी.एस.4 (दलित शोषित समाज संघर्ष समिति) जैसी संस्थाओं की स्थापना की। बैयसेक (बी.ए.एम.सी.ई.एफ) को केन्द्र सरकार के कर्मचारियों का सहारा मिला। बी.एस.पी. का मुख्य लक्ष्य समाज में उपेक्षित समुदायों तथा बहुजन समाज को सशक्त बनाना था। बी.एस.पी के सिद्धान्त के नारे इस जोश को रेखांकित करते हैं। ये नारे थेः

''मत हमारा, राज तुम्हारा (उच्च जाति) नहीं चलेगा नहीं चलेगा'', तथा ''मत से लेगें पी.एम. /सी.एम और आरक्षण से एस.पी/डी.एम।'' बी.एस.पी. ने चुनावी मोर्चे पर तेजी से प्रगति की है। 1996 तक बीएसपी ने एक राष्ट्रीय पार्टी का दर्जा हासिल कर लिया था। बी.एस. पी. प्रमुख मायावती पहली बार 1995 में उत्तरप्रदेश की मुख्यमंत्री बनी। मायावती की अध्यक्षता में राजनीतिक शासनों में बी.एस.पी. वाली सरकार ने कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए अनेक कार्यक्रम शुरू किए। अंबेडकर गाँव कार्यक्रम (विलेज प्रोग्रेम) इन कार्यक्रमों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। अंबेडकर गाँवों के कार्यक्रमों के तहत बीएसपी सरकार ने अंबेडकर गाँवों में कल्याण नीतियाँ शुरू की। अंबेडकर गाँवों में अनुसूचित जातियों की काफी संख्या थी। बी.एस.पी. सरकार ने सामाजिक उद्देश्यों या सीमांत समुदायों में साथ जुड़े प्रतीकों, नायकों तथा प्रतीकों को सांस्कृतिक मान्यता प्रदान की।

2.3.4 भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई) और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी – मार्क्सवादी पार्टी (सी.पी.आई) एम.

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.आई.) की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना 1925 में हुई थी। यह मार्क्सवाद से प्रेरित है। यह दल प्रथम लोकसभा (1952-1957) की मुख्य (प्रमुख) विपक्षी पार्टी बना। इसके एजेंडे में महिलाओं की सामाजिक समानता, निजि स्वामित्व वाले उधमों, का राष्ट्रीयकरण, भूमि सुधार छोटी (पिछड़ी) जातियों के लिए सामाजिक न्याय तथा, प्रदर्शन और हड़तालों के माध्यम से विरोध प्रदर्शन का अधिकार जैसी मांगे शामिल हैं। 1957 के चुनाव में सी.पी.आई. केरल विधानसभा का चुनाव जीतने के बाद संसदीय लोकतंत्र में चुनाव जीतने वाली विश्व की पहली कम्युनिस्ट पार्टी बन गई थी। इस चुनाव में मिली जीत के कारण ई.एम.एस. नम्बूदरीपाद केरल के मुख्यमंत्री बने। भारत में यह पहली गैर-कांग्रेसी सरकार भी थी। भारत में प्राप्त स्वतंत्रता की प्रकृति, भारतीय राज्य की प्रकृति और सोवियत संघ तथा चीन के प्रति दृष्टिकोण के बारे में सी.पी.आई के अंदर बहुत मतभेद थे। इनके कारण नेताओं का एक दल सी.पी.आई. से बाहर आया और उन्होंने 1964 में एक अलग नाम से पार्टी बनाई जिसका नाम था भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) और सी.पी.आई. (एम.), जिसका एक प्रमुख नेता था जिसका नाम नम्बूदरीपाद था। साम्यवादी दल राज्य की प्रकृति को विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण प्रश्न मानते है और भारतीय राज्य के स्वरूप के विषय में दोनों पक्षों की समझ में अंतर था। भारतीय अर्थव्यवस्था की समझ में भारतीय राज्य राष्ट्रीय बुर्जुआ पूँजी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है, और सी.पी.आई (एम) भारतीय राज्य बर्जुआ, जमींदारों और विदेशी पूँजी के गठजोड़ का प्रतिनिधित्व करता है भारत के तीन राज्य पश्चिम बंगाल, केरल और त्रिपुरा इसका सबसे बड़ा सहारा है। सन् 1957 में नम्बूदरीपाद की पहली कम्युनिस्ट सरकार के अलावा, 1977 से अब तक उन्होंने कई वामपंथी और लोकतांत्रिक दलों के साथ मिलकर कई बार सरकार बनाई। परंतु पश्चिम बंगाल और त्रिपुरा में इन दलों के समर्थन में धीरे-धीरे कमी आई। पश्चिम बंगाल में मुख्य रूप से अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेंस (टी.एम.सी.) और त्रिपुरा में भाजपा की इनकी स्थिति में गिरावट आयी है। ये सीपीआई और सीपीआई (एम) की सदस्यता संरचना होती है तथा भाजपा और डी.एम.के कैडर आधारित पार्टियां हैं।

2.3.5 राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एन.सी.पी.) तथा अखिल भारतीय तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी)

एन.सी.पी. की स्थापना 25 मई 1999 को शरद पवार, पी.ए. संगमा तथा तारिक अनवर द्वारा हुई थी। पी.ए. संगमा ने 2012 में पार्टी छोड़ दिया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से निष्कासित होन पर, इन तीनों से इस दल का निर्माण किया क्योंकि, तीनों नेताओं को सोनिया गांधी

का नेतृत्व पसदं नहीं था क्योंकि वे उन्हें विदेशी मानते थे। यह दल खुद को एक सहस्राब्दी पार्टी ''मिलेनियम पार्टी'' मानते थे जो एक आधुनिक और प्रगतिशील अभिविन्यास वाला दल है, जो समग्र लोकतंत्र, गांधीवादी धर्मनिरपेक्षता और संघवाद के जरिए राष्ट्रीय एकता में विश्वास रखता है। शरद पवार इसके प्रभावशाली नेता हैं जिसका महाराष्ट्र में काफी लोगों का समर्थन प्राप्त है। यू.पी.ए. I और यू.पी.ए. II के दौरान, यह पार्टी कांग्रेस के साथ थी।

तृणमूल कांग्रेस की स्थापना 1 जनवरी, 1998 को ममता बनर्जी द्वारा हुई थी। इस पार्टी के बनाने से पहले, ममता बनर्जी कांग्रेस पार्टी में काफी सक्रिय थी और वो 26 सालों से कांग्रेस से जुड़ी थी। इस पार्टी को पश्चिम बंगाल के लोगों का समर्थन है, जहाँ ममता बनर्जी की सरकार है। पश्चिम बंगाल के अलावा, केरल, मणिपूर, त्रिपूरा, असम, हरियाणा, अरूणाचल प्रदेश और उड़ीसा के विधान सभा चुनावों में तृणमूल कांगेस ने भागेदारी की थी।

अभ्यास प्रश्न 1

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) भारत में चुनाव, आयोग द्वारा वर्णित विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रकार क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) बहुजन समाज पार्टी (बी.एस.पी.) पर एक संक्षिप्त लेख लिखिये।

.....

.....

.....

.....

.....

2.4 राज्य/क्षेत्रीय दल

1960 के दशक से लेकर अब तक क्षेत्रीय राजनैतिक दल अनेक राज्यों की राजनीतिक में प्रभावशाली भूमिका निभा रहे है। वस्तुतः कई अवसरों पर वे संयुक्त राजनीति के माध्यम से राष्ट्रीय सरकारों को चलाने में सहभागी रहे हैं।

उत्तर और दक्षिण तथा पूर्व और पश्चिम में प्रादेशिक या क्षेत्रीय दलों के उद्भव का कोई एक स्वरूप नहीं है। क्षेत्रीय दल समाज में कुछ घटनाक्रम का प्रतिबिंब है। ये घटनाक्रम भाषाई राज्य का निर्माण कांग्रेस प्रणाली का पतन, असमान आर्थिक विकास, लामंबदी, जातीयता, राजनीति में नये गुटों का प्रदेश तथा पहचान की राजनीति इत्यादि हैं। इन पार्टियों का उदय उत्तर से दक्षिण तक अलग-अलग रहा है। क्षेत्रीय राजनीतिक दल क्षेत्रीय पहचान

और अपेक्षाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमें उनकी संस्कृति, सामाजिक समूह, विकास का तरीका, नेतृत्व, लामबंदी का तरीका तथा अन्य कई मुद्दे शामिल हैं। विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रीय दलों का उदय तथा उनका समर्थन आधार वहाँ की सामाजिक प्रकृति एवं परिवर्तन को इंगित करता है। भूमि सुधारों का प्रभाव, 1950-1960 के दशक की हरित क्रांति, पिछड़े वर्गों के लिये आरक्षण, इन सबने क्षेत्रीय नेताओं को उभरने का मौका दिया खासकर उत्तर भारत में। इनमें प्रमुख नेता हैं जैसे चरण सिंह, कर्पुरी ठाकुर, मुलायम सिंह यादव, लालू प्रसाद यादव, नीतीश कुमार। उन्होंने कई क्षेत्रीय दलों का गठन किया जैसे, बी.के.डी, बी.एल.डी, एल.डी., एस.पी., आर.जे.डी., जे.डी. (यू) इत्यादि। इन पार्टियों ने किसानों की माँगों एवं पिछड़ें वर्गों की माँगों को प्रमुखता से उठाया। इन पार्टियों ने अन्य क्षेत्रीय दलों के साथ मिलकर पिछड़ें वर्गों के लिये आरक्षण को लागू करवाया विशेषकर मंडल आयोग को लागू करके जिसने केंद्र में सरकारी नौकरियों में आरक्षण की व्यवस्था की थी। इन पार्टियों का नेतृत्व भी इन्हीं पिछड़ी जातियों के एवं वर्गों के पास था। भारत में इस प्रकार की 36 मान्यता प्राप्त पार्टियों राज्यों में मौजूद हैं। इस अखंड में, आप इन दलों के कार्यक्रमों, नेतृत्व, सामाजिक आधार लामबंद का तरीका, उनकी विचारधारा के बारे में पढ़ेंगे।

2.4.1 एस.पी., बी.के.डी./बी.एल.डी तथा जनता दल (यूनाइटेड)

समाजवादी पार्टी एवं राष्ट्रीय जनता दल बिहार और यू.पी. में सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया की उपज है तथा दोनों पार्टी के नेताओं ने जे.पी. आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। बाद में उन्होंने अपना दल गठित कर लिया एवं अन्य पिछड़ें वर्गों के प्रतिनिधि बन गये। राष्ट्रीय जनता दल को बिहार में पिछड़े वर्गों के अलावा मुस्लिम समुदाय का भी समर्थन मिला था। लाल प्रसाद जो कि राष्ट्रीय जनता दल को बिहार में पिछड़ें वर्गों के अलावा मुस्लिम समुदाय का भी समर्थन मिला था। लालू प्रसाद जो कि राष्ट्रीय जनता दल के जनक, पिछड़ी जातियों की पहचान एवं उनके सम्मान की सम्मान की जिंदगी पर बल दिया।

2.4.2 डी.एम.के, ए.आई.ए.डी.एम.के. तथा टी.डी.पी.

तीन राजनीतिक दल - डी.एम.के., ए.आई.डी.एम.के. तथा टी.डी.पी. भारत के दक्षिण भारतीय राज्यों क्षेत्रिय दलें के उदाहरणों में आते हैं। द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डी.एम.के.) तमिलनाडु में द्रविड़ आंदोलन में से विकसित हुआ सिजका उद्देश्य द्रविड़ों अथवा गैर-ब्राह्मण को आत्म सम्मान दिलाना था। बाद में 1972 में डी.एम.के. का भी विभाजन हो गया और लोकप्रिय फिल्म अभिनेता एम.जी. रामचंद्रन ने एक अलग पार्टी बनाई जिसका नाम था ए.आई.ए.डी. एम.के.। यद्यपि तमिलनाडु में अनेक राजनीतिक दल हैं, डी.एम.के. तथा ए.आई.डी.एम.के. उनमें सबसे अधिक प्रभावशाली हैं। ये दोनों दल राज्य में सरकारें बनाते रहें हैं। डी.एम.के. सत्ता में होता है तो ए.आई.डी., ए.डी.एम. के विरोधी होता है। तथा जब ए.आई.डी.एम. के सत्ता में होता है तो डी.एन. के विरोधी होता है। डी.एम.के. ने 1967 में कॉंग्रेस को पराजित करके राज्य में अपनी सरकार बनायी और यह पहली सरकार थी। 1977 के चुनावों में डी. एम.के. की हार हुई तथा ए.आई.ए.डी.एम.के. की जीत हुई। इस प्रकार 1970 के दशक से लेकर आज तक इन्हीं दोनों पार्टियों ने राज्य की राजनीति में अपना प्रभुत्व कायम किया है। आंध्र प्रदेश में तेलगू देशम पार्टी (टी.डी.पी.) सक्रिय है।

इसका का गठन 1982 में तेलगू अभिमान पर फिल्म अभिनेता एन.टी. रामाराव ने किया था। इस पार्टी का प्रमुख लक्ष्य था तेलगू गौरव को पुनः प्राप्त करना जो कि कॉंग्रेस के शासन में खो गया था क्योंकि आंध्रप्रदेश की राजनीति में उस वक्त तक कॉंग्रेस का ही दबदबा रहा था। टी.डी.पी. ने प्रमुख रूप से इन मुद्दों को उठाया जैसे - भूमि सुधारों को लागू करना,

शहरी आय पर रोक, सस्ते दामों पर चावल मुहैया कराना तथा अन्य लुभावने मुद्दे भी शामिल थे। एन.टी. रामाराव की मृत्यु के पश्चात् उनका दामाद चंद्रबाबू नायडू टी.डी.पीऋ का मुखिया बन गया। 1995 में चंद्रबाबू नायडू आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री बन गये थे। टी.डी. पी. का समर्थन किसानों एवं कामा समुदाय के लोगों द्वारा किया जाता है। 2014 में तेलंगाना राज्य के गठन के बाद टी.डी.पी. का आधार सिकुड़ कर आंध्रप्रदेश तक ही सीमित रह गया है। यह रायलसीमा और आंध्रप्रदेश दोनों तक सीमित है। टी.डी.पी. को प्रमुख चुनौती अन्य क्षेत्रीय पार्टी वाई.एस.आर. (काँग्रेस) द्वारा मिली है। 2019 के विधान सभा चुनावों में इसी पार्टी ने टी.डी.पी. को बुरी तरह पराजित किया और इसके नेता जगनमोहन रेडी आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री बने।

2.4.3 ए.जी.पी.

असम गण परिषद का गठन 1985 में किया गया था। यह आस्म (ऑल असम स्टूडेंट यूनियन) के तौर पर राज्य में काफी सक्रिय रही थी। आस ने असम गण संग्राम परिषद के साथ मिलकर 1979 से 1985 तक आंदोलन चलाया, जिसमें और कानूनी रूप से रह रहे। शरणार्थियों विशेषकर बाँग्लादेशी शरणार्थियों के खिलाफ यह आंदोलन था। यह आंदोलन तब समाप्त हुआ जब आसू और केन्द्र सरकार के बीच एक समझौता हुआ इस समझौते के अनुसार जो विदेशी 31 मार्च 1977 को असम में आये उन्हें बाहर भेजा जायेगा, उन्हें मतदाता सूची से निकाला जायेगा एवं भारत से बेदखल किया जायेगा। इस समझौते के पश्चात् आसू भारत से बेदखल किया जायेगा। इस समझौते के पश्चात आसू और असम गण संग्राम परिषद में मिलकर ए.जी.पी. का गठन किया। इसका मुख्य मकसद था चुनाव में भाग लेना और सरकार बनाना। ए.जी.पी. ने 1986 में चुनाव लड़ा तथा चुनावों में इसे भारी जीत मिली एवं इसके नेता प्रफुलकुमार महांता असम के मुख्यमंत्री बने जिन्होंने विदेशियों के खिलाफ आंदोलन चलाया था। ए.जी.पी. ने प्रफुल कुमार मंहाता के नेतृत्व में असम में दो बार सरकार बनाई थी।

2.4.4 आम आदमी पार्टी (आप)

आम आदमी पार्टी (आप) का गठन भ्रष्टाचार के खिलाफ हुए आंदोलन के बाद हुआ था। यह आंदोलन अन्ना हजारे ने 2011 में चलाया था जिसमें मध्यम वर्ग ने जाति एवं भाषा को दरकिनार करके बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया था। अरविन्द केजरीवाल जो कि आम आदमी पार्टी के जनक थे भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन के प्रमुख चेहरे के रूप में उभर कर सामने आये। आम आदमी पार्टी अन्य पार्टियों से भिन्न है। क्योंकि यह विचारधारा पर आधारित नहीं है तथा यह किसी सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन को प्रतिबंधित नहीं करती है। आम आदमी पार्टी ने दो बार दिल्ली में सरकार बनाई 2013 एवं 2015। इसने 2015 में हुए चुनावों में ऐतिहासिक जीत दर्ज की थी जब इसने 70 में से 67 सीटें जीत थी। 2020 के विधान सभा चुनाव में इसने दिल्ली की 62 सीटें जीती थी।

2.4.5 शिरोमणी अकाली दल

शिरोमणी अकाली दल सिख आंदोलन की उपज है जो कि 1950 में गुरूद्वारों में महन्तों के खिलाफ् उनके भ्रष्टाचार के विरूद्ध आंदोलन चलाया था। इस आंदोलन के चलते सरकार ने 1925 में एक कानून पारित किया जिसमें गुरूदारों का नियंत्रण और प्रबंध शामिल था। इस कानून के द्वारा गुरूदारों का नियंत्रण एक प्रबंध सांमती को दिया गया जिसे शिरोमणी गुरूद्वारा प्रबंधक समिति (एस.जी.पी.सी.) के नाम से जाना जाता है। अकाली दल ने इस समिति पर अपनी पकड़ मजबूत बना ली थी। इसने सिख समुदायों के हितों पर अमल

करना शुरू कर दिया था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व थी। इसने ब्रिटिश सरकार के अन्याय के विरूद्ध लड़ाई लड़ी थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, इसने पंजाबी सूबा के गठन की माँग की थी, तथा 1966, नवम्बर में केन्द्र सरकार ने पंजाब राज्य का गठन किया जिसमें सिख समुदाय बाहुल्य में है तथा हरियाणा को इससे अलग किया गया। अकाली दल पंजाब के लोगों की माँगों के लिये उन्हें लामबंद करती आ रही है। उसके प्रमुख मुद्दों में शामिल है जैसे - पंजाब को पूर्ण क्षेत्रीय स्वायत्ता प्रदान की जाये, किसानों के हितों की रक्षा की जाये, नदियों के जल का बंटवारा किया जाये। तथा अमृतसर के पवित्र शहर घोषित किया जाये। 1980 के दशक से, अकाली दल को भी विभाजन का सामना करना पड़ा है जिनमें प्रकाश सिंह बादल के नेतृत्व में यह पार्टी आज की पंजाब की प्रमुख क्षेत्रीय पार्टी है। यह एन.डी. ए. गठबंधन का भी हिस्सा रही है तथा अटल बिहारी वाजपेयी एवं नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार में इसकी भागीदारी रही।

2.4.6 शिव सेना

शिव सेना का समर्थन और गतिविधि महाराष्ट्र राज्य तक ही सीमित हैं। इसकी स्थाना, 1966 में बाल ठाकरे के द्वारा की गयी थी। इसका प्रमुख उद्देश्य मराठी लोगों की अस्मिता की रक्षा करना था या फिर 'मराठी मानुष' की रक्षा करना जिसमें मराठी भाषा, संस्कृति, आर्थिक मुद्दे, तथा महाराष्ट्र राज्य के हित को रक्षा करना शामिल हैं। क्षेत्रीय माँगों के अलावा इसने हिन्दू अस्मिता का भी मुद्दा जोर-षोर से उठाया। शिव सेना में अपनी गतिविधि 1960 के दशक में शुरू की गई थी। इसका मानना था कि गैर-मराठी लोगों ने खासकर दक्षिण भारतीय लोगों ने मराठी लोगों पर अपना कब्जा कर लिया है तथा वे आर्थिक अवरों का फायदा उठा रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप कई तमिलों को मुंबई छोड़कर जाना पड़ा था। 1970 के दशक में, शिव सेना का ध्यान, कम्यूनिस्टो की तरफ गया जिसे वे राष्ट्र-विरोधी समझते थे। 1980 के दशक से, इसने हिंदुओं को अपने पक्ष में करने का अभियान चलाया। इसने अयोध्या में राम आंदोलन मंदिर बनाने के लिए किये गये आंदोलन में भी भाग लिया था। शिव सेना एन.डी.पी सरकार का भी हिस्सा रही है। 2019 के विधान सभा चुनावों के बाद इसने एम.डी.ए. को छोड़ दिया तथा एन.सी.पी. और काँग्रेस के साथ मिलकर राज्य में सरकार बनाई थी। उद्धव ठाकरे उसके मुख्यमंत्री बने थे।

2.5 पंजीकृत एवं गैर-पंजीकृत पार्टियां

भारत में 2000 से ज्यादा पंजीकृत एवं गैर-पंजीकृत पार्टियां है। ये पार्टिया क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित है तथा इनकी कार्यप्रणाली, इनकी नेतृत्व, नीतियों एवं कार्यक्रमों में काफी अंतर है। इन पार्टियों के नेता किसी विशेष समुदाय वर्ग से संबंधित भी होते हैं, कभी-कभी ये नेता अपने पूर्व दल के साथ मनमुटाव होने पर अपनी अलग पार्टी बना लेते हैं। 1990 के दशक से इन पार्टियों की उपस्थिति सबसे अधिक उत्तरप्रदेश एवं बिहार में देखने को मिलती हैं। सामान्यतौर पर इन पार्टियों का गठन ऐसे नेताओं द्वारा किया गया है जो पिछड़े वर्गों में आते हों। ये पार्टियां पिछड़े वर्गों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मुद्दों को उठाती हैं। राष्ट्रीय पार्टियों की तुलना में इन क्षेत्रीय पार्टियों का चुनावी प्रदर्शन कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रहता है। फिर भी, ये पार्टियां चुनाव जीतने पर सरकार बनाने के लिये राष्ट्रीय दलों के साथ सौदेबाजी करती हैं। कुछ दलों के उदाहरण इस प्रकार हैः पूर्वी उत्तर प्रदेश में अपना दल, पी.एम.एस.पी., राजभर समुदाय के दल तथा बिहार में उपेन्द्र कुषवाहा की राष्ट्रीय लोक समता पार्टी शामिल है।

बोध प्रश्न 2

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) क्षेत्रीय दलों के गठन के पीछे कौन-कौन से कारण है? इस प्रश्न का उत्तर किसी क्षेत्रीय पार्टी के संदर्भ में दीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

2) आम दल का गठन किसी अन्य राज्य स्तरीय पार्टी से अलग है। ऐसा क्यों है?

.....

.....

.....

.....

.....

2.6 सारांश

भारत में राजनीतिक दल राजनीतिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। भारत में करीब 2300 से अधिक पार्टियां है जो लोकतंत्र को मजबूत कर रही हैं। इतनी अधिक पार्टियाँ होने के बावजूद केवल सात राष्ट्रीय पार्टियां हैं। 1980 दशक के बाद से बहु-दलीय प्रणाली के बाद देश में गठबंधन की सरकारों का दौर चला है जो केन्द्र एवं राज्य दोनों में मौजूद हैं। क्षेत्रीय पार्टियां चुनावी राजनीति में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। ये दल स्थानीय वोटरों को चुनाव में भाग लेने का अवसर प्रदान कर रही है और उनके प्रतिनिधि उनकी आवाज उठा रहे हैं। क्षेत्रीय दल राज्य अथवा लोकल स्तर पर लोगों की आकाक्षाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

2.7 संदर्भ

अरोड़ा, बलवीर (2002), पोलिटिकल पार्टिज एन्ड ए पार्टी सिस्टमः द इमरजैंस ऑफ न्यू कोयलिसंस इन द बुक, ऑफ जोया हसन, *पार्टिज एंड पार्टी पोलिटिक्स इन इंडिया,* न्यू दिल्ली, ओ. यू. पी.

भांबरी, सी. पी. (1968), आईडियोलोजी एन्ड पोलिटिकल पार्टिज इन इंडिया. *इकोनामिक एन्ड पोलिटिकल वीकली* वोल्यूम 3 (16): पृ. 643-646।

ब्रास, पॉल (1985), *कास्ट, फैक्सन एन्ड पार्टी पद इंडियन पालिटिकल,* नई-दिल्ली, चाणक्य प्रकाशन।

छिब्बर, के, प्रदीप एन्ड राहुल वर्मा (2018), *आईडियोलोजी एन्ड आईडिटीं : द् चेंजिंग पार्टी सिस्टम ऑफ इंडिया.* न्यू-दिल्ली, ओ.यू.पी.।

गुप्ता, दियांकर (1982) *नेटिविज्म इन ए मेट्रोपोलिस, द शिव सेना इन बोम्बे,* मनोहर, नई दिल्ली.

जी. एस. (1999) राइज ऑफ स्मालर पार्टीज, *ई.पी.डब्ल्यू,* वोल्यूम 34 (41), अक्टूबर, 1999 पी.पी. 2912-13

हसन, जोया (2012), *कॉंग्रेस आफ्टर इंदिरा पोलिसी, पावर, पोलिटिकल चेंज (1984-2009).* न्यू दिल्ली ओ. यू. पी.

हसन, जोया (2000), पोलिटिक्स एण्ड द स्टेज इन इंडिया. न्यू दिल्ली, इंडिया, सेज, प्रकाशन

हसन, जोया (2002), पार्टिज एन्ड पार्टी पोलिटिक्स इन इंडिया, न्यू दिल्ली, ओ. यू. पी.

हीथ, ओलिवर (2002), अनोटोमी ऑफ बी. जे. पी. राइज टू पावरः सोशल, रीजनल, एंड पोलिटिकल एक्सपेंसन इन 1990 (सं.) इन जोया हसन, पार्टीज एन्ड पार्टी पालिटिक्स इन इंडिया।

जैफरलो, क्रिस्टोफ (2002) ए स्पेसिफिक पार्टी बिल्डिंग स्ट्रेटेजीः द जनसंघ एन्ड द आर. एस.एस. इन जोया हसन, पार्टी एण्ड पार्टी पोलिटिक्स न्यू दिल्ली, ओ. यू. पी.

पाई-सुधा, (1990), रीजनल पार्टीज एन्ड द इमर्जिंग पैटर्न्स ऑफ पोलिटिक्स इन इंडिया, द इंडिया जनरल ऑफ पोलिटिकल साईस वोल्यूम 51, जुलाई-सितंबर, 1990 - पी पी 393-425

पाई-सुधा, (2002) दलित असर्सन एन्ड द अनफिनिस्ड डेमोक्रेटिव रिकेल्यूशनः द बहुजन समाज पार्टी इन उत्तर प्रदेश, सेज प्रकाशन, नई दिल्ली.

ब्रास, पॉल (1985), *कास्ट, फैक्सन एन्ड पार्टी इन इंडियन पालिटिकल,* नई-दिल्ली, चाणक्य प्रकाशन।

भांभरी, सी. पी. (1968), आईडियोलोजी एन्ड पोलिटिकल पार्टिज इन इंडिया, *इकोनामिक एन्ड पोलिटिकल वीकली* वोल्यूम 3 (16): पृ. 643-646।

शास्त्री, संदीप, सूरी, के. सी. एन्ड यादव, योगेन्द्र (2009) इलेक्टोरल पोलिटिक्स इन इंडियन स्टेट्सः लोक सभा इलैक्षन्स इन 2004 एन्ड बियोंड, ओ. यू. पी. न्यू दिल्ली.

सुब्रमन्यीनम, नरेन्द्र (2002), ब्रिंजिंग सोसाइटी बैक इनः ऐथानिसिटी, पोपूलिज्म, एन्ड प्लूरेलिज्म इन साउथ इंडियाः इन जोया हसन पार्टीज एन्ड पोलिटिक्स इन इंडिया, न्यू दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

2.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1) भारत में तीन प्रकार के दल हैः राष्ट्रीय दल, राज्य का क्षेत्रीय दल, तथा पंजीकृत या गैर-पंजीकृत दल।

2) बहुजन समाज पार्टी की स्थापना 1984 में काशीराम द्वारा की गयी थी। यह देश में जातीय आंदोलन का परिणाम था जो पंजाब से शुरू होकर यू. पी. तक फैलता गया।

इसका प्रमुख लक्ष्य था दलितों एवं पिछड़ों को अपने साथ हो रहे जुल्म के खिलाफ एकजुट करना। इसके समर्थकों में अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछड़े वर्ग, मुस्लिम, क्रिषिचयन एवं सिख समुदाय के लोग शामिल है। लेकिन बी.एस.पी. कभी भी सभी अल्पसंख्यक वर्गों की पार्टी न बन सकी थी। बी.एस.पी. का सबसे प्रमुख आधार दलित वर्ग ही था जो कि राजनीतिक रूप से सशक्त था। काशीराम इसके जनक थे और वे अंबेडकर की विचारधारा के समर्थन थे। उनका मानना था दलित वर्ग को एक ही बात पर जोर देना चाहिए कि उनको राजनीतिक सत्ता प्राप्त हो।

अभ्यास प्रश्न 2

1) दलों के गठन का प्रमुख कारण जातियता, सामाजिक, सांस्कृतिक मुद्दे, सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलन, राजनीतिक प्रतिनिधित्व पहचान की राजनीति इत्यादि।

2) आम आदमी पार्टी का गठन अन्य क्षेत्रीय दलों से दो कारणों से है इसकी कोई एक विचारधारा नहीं है; तथा यह किसी एक विशेष वर्ग का प्रतिनिधित्व नहीं करती है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY